हर समारोह के लिए इकोफ्रेंडली थाली, कटोरी, प्लेट के निर्माता
श्री इंटरप्राइजेज
शिबराल कुंज, रेलवे मैदान, मकराई, डेहरी-आन-सोन
8092175799
निर्माण इकाई : अर्जुन बिगहा

रजिस्ट्रार आफ न्यूजपेपर्स आफ इंडिया (भारत सरकार) से पंजीकृत RNI38345/80 कोड BIH HIN02581
अखिल भारतीय विशेष 'प्रज्ञा' पुरस्कार प्राप्त

सोनमाटी

sonemattee.com

बिहार के विश्वविश्रुत सोन नद अंचल का अग्रणी समाचार-विचार पत्र

1999 से सक्रिय नूतन-पुरातन ज्ञान समागम का प्रतिनिधि मंच
सोनघाटी पुरातत्व परिषद, बिहार
कार्यालय : सोनमाटी-प्रेस गली
डेहरी-आन-सोन (रोहतास)
माइक्रो म्यूजियम : अर्जुन बिगहा
9523154607, 7991179942

डेहरी-डालमियानगर : 10 जून-16 जून, 2024
ग्लोबल न्यूजपोर्टल sonemattee.com
1979 में स्थापित हिन्दी में भारत का एक सर्वश्रेष्ठ लघु आंचलिक मीडिया ब्रांड वर्ष 44 अंक 64 रु. 10/- वार्षिक सहयोग 250/-
WA 9708778136,Ph.9955622367 Email: sonemattee@gmail.com Postal R.n.SSR/G-1/2018-19

सोनमाटीडाटकाम
sonemattee.com

देश-विदेश में हो रहा सर्च

बिहार के सोन नद अंचल केंद्रित ग्लोबल न्यूज-व्यूज वेबपोर्टल ***सोनमाटीडाटकाम*** *देश-प्रदेश की राजधानी पटना, नई दिल्ली और अन्य प्रदेशों की राजधानियों रांची, भोपाल, लखनऊ, कोलकाता, गांधीनगर, चंडीगढ़, हैदराबाद, देहरादून, शिमला, मुंबई आदि सहित भारत के प्रमुख 06 दर्जन शहरों और अमेरिका, इंग्लैंड, नेपाल, मैक्सिको, कनाडा, डेनमार्क, जापान, चीन आदि डेढ़ दर्जन देशों में नियमित सर्च हो रहा है। सोनमाटी की संपादकीय नीति रोजमर्रा की सूचना समाचार से अलग खास कंटेन्ट की है।*

प्रबंध संपादक, सोनमाटी

सर्च इंजनों
-गूगल Google
-याहू Yahoo
-बिंग Bing
पर सर्च करें।

जीएनएसयू ने मनाया 6वां स्थापना दिवस

डेहरी-आन-सोन-विशेष संवाददाता। जमुहार स्थित गोपालनारायण सिंह विश्वविद्यालय (जीएनएसयू) का छठा स्थापना दिवस समारोह विश्वविद्यालय स्थित देवमंगल सभागार में मनाया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के संस्थापक एवं राज्यसभा के पूर्व सांसद गोपाल नारायण सिंह ने सभी मंचस्थ अतिथियों के साथ दीप प्रज्ज्वलन कर शुभारंभ किया। माँ सरस्वती के वंदन एवं करतल ध्वनियों के साथ शानदार आगाज को अंजाम तक पहुंचाने के उद्देश्य से छठे स्थापना दिवस समारोह में 6 पाउंड का केक अतिथियों के द्वारा काटा गया। कार्यक्रम की अगली कड़ी के रूप में मंचासीन अतिथियों का स्वागत पौधा देकर किया गया।

कार्यक्रम के आरंभ में विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डा. कुमार आलोक प्रताप ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय की विकास यात्रा पर विस्तार से जानकारी देते हुए उन्होंने सभी आगत अतिथियों का स्वागत किया।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को अपनी ताकत बताते हुए एकेडमिक डायरेक्टर सुदीप कुमार ने कहा कि विद्यार्थियों की बदौलत यह संस्था है। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं कुलपति डा. एमके सिंह ने विश्वविद्यालय परिवार को स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि आप सबके लिए मैं हमेशा उपलब्ध हूं। जिनको भी समस्या हो बेहिचक कहें जिससे संस्था उत्तरोत्तर वृद्धि करती रहे। प्रो. सिंह ने बताया कि अच्छी शिक्षा के लिए शारीरिक एवं सांस्कृतिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य भी जरूरी है जिसके लिए खेल एक महत्वपूर्ण जरिया है और इस ओर प्रयास किया जा रहा है।

समारोह के मुख्य अतिथि एवं विश्वविद्यालय के संस्थापक गोपाल नारायण सिंह ने विश्वविद्यालय परिवार को स्थापना दिवस की बधाई देते हुए कहा कि संस्था बिल्डिंग से नहीं बल्कि बच्चों शिक्षकों और सहयोगियों से बनता है। संस्था के सम्यक विकास में बच्चे, शिक्षक, सहयोगी एवं प्रबंधन सभी अपना सर्वश्रेष्ठ दें तब हम ऊंचे मुकाम पर जा पाएंगे जिसकी यात्रा सत्तर प्रतिशत पूरी हो चुकी है और सिर्फ तीस प्रतिशत ही शेष है। राजीव रंजन निदेशक, खेल एवं शारीरिक शिक्षा तथा डा संदीप कुमार मौर्य, नारायण इंस्टीट्यूट आफ एग्रीकल्चर साइंस ने विश्वविद्यालय के छात्र मुकेश कुमार द्वारा बनाए गए कुलाधिपति के तैल चित्र को कुलाधिपति को प्रस्तुत किया। कुलाधिपति ने छात्र की प्रतिभा से प्रभावित होकर विश्वविद्यालय में फाइन आर्ट्स को आरंभ करने की घोषणा की। इस अवसर पर कई रंगा-रंग कार्यक्रम एवं विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमें सभी विभागों की छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में सभी संकायों के संकायाध्यक्ष, विभागों के विभागाध्यक्ष एवं संस्थाओं के निदेशक के अलावे सहायक कुल सचिव मिथिलेश सिंह, मोनिका सिंह, निरूपमा सिंह समेत सभी विद्यार्थीगण मौजूद थे।

कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के जनसंपर्क पदाधिकारी भूपेंद्र नारायण सिंह ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन छात्र कल्याण के संकायाध्यक्ष डा. कुमार अंशुमान ने किया।

केंद्र और बिहार सरकार मिलकर राज्य के वस्त्र उद्योग के विकास की संभवनाओं को चिन्हित करेगी : गिरिराज सिंह

पटना (कार्यालय प्रतिनिधि)। बिहार में वस्त्र उद्योग के क्षेत्र में विकास की संभावनाओं को तलाशने के उद्देश्य से पटना में केंद्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने राज्य के उद्योग मंत्री नितीश मिश्रा के साथ एक बैठक की। बैठक में रोहित कंसल, अपर सचिव, वस्त्र मंत्रालय, संजीव पौण्ड्रीक, अपर मुख्य सचिव (उद्योग विभाग) बिहार सरकार, अमृत राज, विकास आयुक्त (हस्तकरघा), भारत सरकार राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान के प्रतिनिधि के अलावा राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत सरकार और बिहार सरकार मिलकर राज्य के वस्त्र उद्योग के विकास की संभवनाओं को चिन्हित करेगी और शीघ्र ही बिहार, भारत के वस्त्र मानचित्र पर एक सशक्त राज्य के रूप में उभर कर आयेगा। उन्होंने कहा कि बिहार में तसर सिल्क, ऐरी सिल्क और गार्मेंट क्षेत्र में असीम संभावनाएँ हैं और वो खुद तमिलनाडु के त्रिपुर के बड़े उत्पादकों के सम्पर्क में हैं और शीघ्र ही वहां से कुछ उत्पादक राज्य का दौरा करेगी। उन्होंने आगे कहा कि उनकी मंशा है कि राज्य में वस्त्र उद्योग का समुचित विकास हो और इस क्षेत्र में कम से कम एक से दो लाख रोजगार का सृजन किया सकता है।

केंद्रीय मंत्री श्री सिंह ने आगे कहा कि वस्त्र उद्योग में कृषि के बाद सबसे बड़ा रोजगार इसी क्षेत्र में है और करीब 5.5 करोड़ लोग इस क्षेत्र से जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि अगले दो वर्षों में इस क्षेत्र में और विकास किया जायेगा तथा लगभग 50 लाख अतिरिक्त लोगों को रोजगार दिया जायेगा, जिसमें उनका लक्ष्य दो लाख लोगों को बिहार में रोजगार देना है। उन्होंने आश्वासन दिया कि भारत सरकार, बिहार सरकार को हर संभव मदद देने को तत्पर है और राज्य सरकार से एक ब्लूप्रिंट बनाने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर राज्य के अपर मुख्य सचिव (उद्योग) श्री संदीप पोंड्रिक ने कहा कि राज्य में मानव संस्थान प्रचुर है और राज्य की औद्योगिक नीति किसी भी राज्य से बेहतर है। जरूरत है निवेशकों के बीच अनुकुल वातावरण तैयार करने का। उन्होंने विभिन्न हित धारकों के साथ इस सम्बन्ध में शीघ्र ही एक बैठक के आयोजन का सुझाव दिया।

अकस और एनएमसीएच ने निर्धन की बचाई जान

डेहरी-आन-सोन (कार्यालय प्रतिनिधि)। जिले की अग्रणी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था अभिनव कला संगम और राज्य के प्रतिष्ठित चिकित्सा शिक्षण संस्थान नारायण मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल की तत्परता से एक निर्धन की बचाई गई जान।

अकस के सचिव नंदन कुमार ने बताया कि सुखरी राम नाम के व्यक्ति ने अपनी शारीरिक दुर्बलता और रक्त पूर्ति की आवश्यकता की गुहार लगाई। नंदन कुमार ने संस्था के निर्देशक संजय सिंह वाला और अध्यक्ष मो. वारिस अली को अवगत कराते हुए नारायण मेडिकल कॉलेज के पीआरओ भूपेंद्र नारायण सिंह से इस बाबत संपर्क कर सभी जांच प्रक्रिया और दस्तावेज पर हस्ताक्षर कि प्रक्रिया पूरी करने के बाद एडमिट कराया गया। साथ ही नारायण मेडिकल कॉलेज की ओर से रहने खाने और समुचित चिकित्सकीय देखभाल और रक्त पूर्ति प्रदान की गई।

वहीं संस्था के सचिव नंदन कुमार ने नारायण मेडिकल कॉलेज के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सामाजिक संचेतना में आगे बढ़कर हम सभी का मनोबल बढ़ाने का काम किया है। इस सामाजिक संचेतना में कॉलेज के महाप्रबंधन उपेंद्र कुमार, डा. संजीव पाराशर, डा. महेंद्र प्रताप सहित सभी चिकित्सकीय दल ने अपना भरपूर सहयोग दिया। संस्था की ओर से विजय चौरसिया, शादाब सिद्दीकी कलाम हाशमी, रवि तिवारी व अन्य सदस्यों ने भी अपना सहयोग दिया।

पत्रकार सुरेंद्र किशोर को पद्मश्री सम्मान मिला

पटना (सोनमाटी समाचार नेटवर्क)। पटना राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की ओर से पटना के जिलाधिकारी शीर्षत कपिल अशोक ने पत्रकार सुरेंद्र किशोर को पदद्मश्री सम्मान प्रदान किया। सुरेंद्र किशोर को भाषा, शिक्षा तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदीन के लिए पयश्री सम्मान से सम्मानित किया गया है। वे स्वास्थ्य कारणों से राष्ट्रपति भवन में आयोजित सम्मान समारोह में नहीं जा सके थे। जिलाधिकारी उनके कोरजी (फुलवारीशरीफ) स्थित आवास पर गए और उन्हें पद्मश्री सम्मान प्रदान किया। उनको शुभकामनाएं दीं, उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।

एलएनएमयू : 25 को होगी बीएड की प्रवेश

पटना (सोनमाटी समाचार नेटवर्क)। 25 जून को दो वर्षीय बीएड एवं शिक्षा शास्त्री में नामांकन के लिए होने वाली संयुक्त प्रवेश परीक्षा सोईटी-बीएड-2024 की तैयारी के क्रम में एलएनएमयू के कुलपति प्रो. संजय कुमार चौधरी ने परीक्षा निर्देशिका का विमोचन किया। प्रो चौधरी ने कहा कि इस निर्देशिका में परीक्षा प्रक्रिया के साथ-साथ परीक्षा में संलग्न विभिन्न पदाधिकारियों के कर्तव्यों का विवरण है।

सीईटी-बीएड 2024 के राज्य नोडल पदाधिकारी प्रो.अशोक कुमार मेहता ने बताया कि प्रवेशपत्र डाउनलोड करने के लिए अभ्यर्थी आधिकारिक वेबसाइट www.biharcetbed- Irumu.in पर लॉग-इन कर डाउनलोड कर सकेंगे।

बताया कि 25 जून को होने वाली प्रवेश परीक्षा के लिए अभ्यर्थियों को प्रवेशपत्र एवं अन्य फोटो पहचान पत्र के बिना परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं दिया जाएगी। परीक्षा शुरू होने के आधा घंटा पूर्व यानी 10ः30 बजे के बाद परीक्षा केंद्र में प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। परीक्षार्थियों को प्रवेशपत्र की दो प्रतियां फोटोयुक्त रखनी होगी।

पितृपक्ष मेला को राष्ट्रीय मेला का दर्जा देने की मांग

गया (कार्यालय प्रतिनिधि)। बिष्णुपद प्रबंधकारिणी समिति ने केंद्रीय गृहमंत्री नित्यानंद राय का स्वागत अंग वस्त्र व भगवान विष्णु का प्रसाद भेंट कर किया।

समिति के अध्यक्ष शम्भु लाल विट्ठल एवं सदस्य मणिलाल ने केन्द्रीय मंत्री से विश्व प्रसिद्ध पितृपक्ष मेला को राष्ट्रीय मेला का दर्जा देने की मांग की। कहा कि हर साल भाद्रपद शुक्ल अनंत चतुर्दशी से आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या तिथि तक पितृपक्ष मेला लगता है। इसमें लाखों तीर्थयात्री आते हैं। जो सुविधायें मिलनी चाहिए नहीं मिल पा रही हैं। इस मेला को राष्ट्रीय मेल का दर्जा मिलने से केंद्र सरकार की ओर से सारी मूलभूत सुविधाओं का लाभ तीर्थयात्रियों को मिल सकेगा।

वहीं केन्द्रीय मंत्री ने मांगों को गंभीरता से लेते हुए प्रधानमंत्री तक पहुंचाने का आश्वासन समिति को दिया। अध्यक्ष ने बताया कि पितृपक्ष मेला इस वर्ष 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक का आयोजन होगा।

विजय कुमारी मौर्य की कविता

साहस

मुझे क्या?
कितने भी रावण भरे पड़े हों!
मैं तो लक्ष्मण रेखा भी नांघूगी
और जरूरत होगी तो
दान दक्षिणा भी दूंगी।
मगर तुम्हारे दोनों हाथ
कटे होंने चाहिए या
तुम्हारी मजबूरी
बता रही हो कि तुम
सचमुच दक्षिणा के अधिकारी हो।
यदि तुम्हारे पास शातिर
दिमाग है, कलुषित मन है
तो हमारे पास भी भारतीय
नारी होने का,श्राप देने का
वरदान है,स्वाभिमान है।
वह सब भी है और मार्शल-आर्ट भी है
तुम्हें परास्त करने के तरीके भी हैं,
तुम क्या समझते हो,नारी सिर्फ
दया ममता की ही मूरत है
सुन्दर कनक कामिनी की ही
सूरत है।
दुर्गा, काली, रानी लक्ष्मीबाई,
ऊदा देवी जैसी
नारियों से इतिहास भरा पड़ा है।
ये न समझना कि,
मेरा देश सिर्फ चिकना घड़ा है।

कुमार बिंदु की कविता

क्षमा करना प्रिये

क्षमा करना प्रिये
मैं नहीं टांक सकता
तुम्हारे बालों में गुलाब
क्षमा करना प्रिये
मैं नहीं जताना चाहता हूं प्रीत
तुम्हारे जूड़े में बांधकर फूलों का गजरा
मैं जानता हूं
जूड़े में गजरा बांधने से
बालों में गुलाब टांकने से
और मनमोहक हो जाएगा तुम्हारा सौंदर्य
प्रफुल्लित हो उठेगा तुम्हारा स्त्री मन
देखो प्रिये
कैसे खिलखिला रहा है
टहनी पर बैठा गुलाब
कैसे मस्ती में झुल रहा है
टहनी के झूले पर बैठा गुलाब
सुनो प्रिये
अपने अधरों की हँसी के लिए
किसी को रुलाना
अपने उत्कर्ष के लिए
किसी को मिटा देना
यह मेरे मन को स्वीकार्य नहीं
इसीलिए क्षमा करो प्रिये
मैं नहीं टांक सकता
तुम्हारे बालों में गुलाब
मैं नहीं सजा सकता
तुम्हारे जूड़े में फूलों का गजरा

लता प्रसार की कविताएं

खुरपी कुदाल किसी कोने कानाफूसियों में लगा है

बीज की नस्ल तोड़कर कुछ इजाद हो पाएगा क्या
सवाल ये नहीं की हमें चाहिए क्या सोचिए बचेगा क्या
बदलना उसूल है कुदरत का यहां कुदरत ही बदलना चाहते
हड़प्पा ज़मींदोज़ हुआ इतने बरसों बाद भी बना क्या!

गुलमोहर मुस्कुराकर दुपहरी में स्वागत करता

किसी की बेबाक हंसी किसी की हंसी गुम कर जाती है
चलो जी लें अपनी तरह सदियां इसे नकल कर जाती है
हमारा कोई मुकाबला नहीं किसी से बस बचा लें जिंदगी
ये दुनिया यूं जलकर खुद को ही खत्म कर जाती है!

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक व प्रबंध संपादक निशांत राज के द्वारा सोनमाटी-प्रेस (रोहतास प्रिंटिंग एंड बाइंडिंग वर्क्स) में मुद्रित और पंजीकृत कार्यालय : सोनमाटी-प्रेस गली, जोड़ामंदिर, न्यूएरिया, पो.डालमियानगर-821305, डेहरी-आन-सोन, जिला रोहतास (बिहार) से प्रकाशित। (किसी भी विवाद के लिए डेहरी अनुमंडल न्यायालय ही संबंधित न्यायालय। सामग्री प्रकाशन के जिम्मेदार निशांत राज)

संस्थापक-स्व. कृष्ण किसलय।

निशांत राज (प्रबंध संपादक 9955622367, 9708778136),

उपेंद्रकश्यप (कंटेंट समन्वय),

इनपुटः अवधेश कु.सिंह, मिथिलेशदीपक

सोन-तट का उस्ताद शायर : नासेह नासरीगंजवी

यह 1994-95 की बात है। जब मैं बक्सर की गलियों में कविता की आवारगी में घूमा करता था। वह उर्दू के तरही मुशायरों का दौर था। उसी दरमियान बड़ी मस्जिद के ऐसे ही एक मुशायरे में नासेह नासरीगंजवी नामक एक शख्स मिले, जो औरों के खिलंदड़ स्वभाव से सर्वथा भिन्न थे। विनम्रता, सादगी और मौलिकता से भरे! पता चला कि वह यहां पर पदस्थापित डीसीएलआर मो. सुलेमान साहब के कवि- मित्र हैं और उन्हीं के बुलावे पर यहां आए हैं। तब बक्सर के उर्दू शायरी की दुनिया में हिरमा भोजपुरी, मंजर साहब, बाप साहब, कुमार नयन, शिकन साहब, दर्द साहब, अश्क साहब और विजयन जी बड़े ही महत्वपूर्ण नाम थे। नासेह नासरीगंजवी साहब के कई गुण मुझे बहुत अच्छे लगे। शायरी के प्रति उनका गंभीर ज्ञान वहां हो रही चर्चाओं में निर्णायक भूमिका निभाता था। हालांकि मेरे और उनके बीच उम्र और साहित्यिक प्रवृत्तियों का काफी फासला था- जैसे वे उस समय अधेड़ावस्था में पहुंच गए थे और मैं किशोरावस्था की आगोश में था। वे उर्दू में ग़ज़लगोई करते थे और मैं समकालीन हिंदी कविता की धारा में तैराकी सीख रहा था। जबकि उनकी और मेरी माली हालत समान प्रतीत हो रहे थे, जो हमारे पहनावे और फिजूलखर्ची में संकोच करने की आदतों से झलकते थे।

बरसो-दशकों बीत गए। उस शायर से हुई मुलाकातें ज़ेहन में बनी रहीं, उनकी सादगी मेरे आंतरिक दिल में जगह बनाई रही। जब कुछ वर्ष पहले मैं उर्दू सीख रहा था, तो मेरी इच्छा थी कि सीखने के बाद उस शायर की रचनाओं को पढ़ सकूं। मेरी इस तमन्ना को पूरा किया नासरीगंज निवासिनी शिक्षिका सुश्री यासमीन परवीन ने। उन्होंने उस बुजुर्ग शायर की अब तक प्रकाशित दो गजल संग्रह "गुलिस्तां-ए-आरजू" और "कलाम- ए-नासेह" को मुझे पढ़ने के लिए उपलब्ध कराया। नासेह साहब एक उस्ताद शायर माने जाते हैं, जिन्होंने शायरी की दुनिया में वाजिद मुकाम हासिल किया है और नवोदित शायरों की रचनाओं का नोक पलक बखूबी तरीके से दुरुस्त करने और उन्हें शायरी कौशल का मार्गदर्शन करने का भी महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

सोन नद के बाएं तट पर बसा नासरीगंज का इलाका साहित्यिक दृष्टि से पुरातन काल से बहुत ही उर्वर रहा है। सोन की कल- कल बहती धाराएं, वानस्पतिक विविधता, बालुका राशि से पुरित वहां की पीताभ धरती और प्राकृतिक वातावरण किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को कवि/ साहित्यकार बनाने की भरपूर क्षमता रखता है। वहां की मिट्टी-हवा-पानी में गजब का आकर्षण बल है। संस्कृत के महान गद्य-कवि बाणभट्ट की जन्मस्थली प्रीतिकूट उसका पड़ोसी स्थल है, तो बिहार की नदियों के भागीरथ हवलदार त्रिपाठी सहृदय, आठवें दशक के हिंदी के महत्वपूर्ण कवि अरुण कमल, कथाकार बनाफरचंद्र, भोजपुरी के लोकधर्मी कवि गंगा प्रसाद अरुण और कविट्ठ आलोचक हरेराम सिंह की जन्मभूमियां भी इसी क्षेत्र में हैं। नासरीगंज की साहित्यिक पृष्ठभूमि में उस्ताद शायर नासेह नासरीगंजवी की उपस्थिति साहित्यिक - सांस्कृतिक परिक्षेत्र, विशेषकर उर्दू अदब में अपना मुकम्मल स्थान रखती है।

नासेह नासरीगंजवी की गज़लों का मुख्य स्वर प्रेमबोध की अनुरागी भावनाओं से ओत प्रोत है। इश्क मिजाजी की शायरी के अनूठे रचनाकार के रूप में इनकी महत्तर पहचान बनती है। इनकी रचनाओं का प्रेम राग केवल दैहिक प्रेम और प्रेमालाप का उद्बोधन ही केवल नहीं कराता है, बल्कि प्रेम एहसासों में विस्तार पता हुआ मनुष्यता, सामाजिक परिवेश और सांसारिकता के भावबोध को अपने में समाहित कर लेता है। प्रेम ही एक ऐसा मूलभूत भावनात्मक आवेग होता है, जो जीव जगत के मूर्त-अमूर्त वस्तुओं में सजीविता और पूर्णता को प्राप्त करने की चेष्टा करता है। नासेह साहब की गज़लें गज़ल विधा की शैली यथा भाषा, व्याकरण और संजीदगी पर खरी उतरती हुई मोहब्बत की अनेक दास्तानों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त करती हैं -

चैन दिल से नींद आंखों से चुरा ले जाएगा,
जाएगा तन्हा मगर सब कुछ मेरा ले जाएगा।
जिंदगी का हुस्न जीने की अदा ले जाएगा,
बे निशां करके मुझे मेरा पता ले जाएगा।
उससे कतरा कर गुजर जाएगा हर एक हादसा,
साथ अपने वो बुजुर्गों की दुआ ले जाएगा।
दौलतें गम से हूं मालामाल मुझको गम नहीं,
मेरी खुशियों के सिवा वह और क्या ले जाएगा।
जरद एक पत्ता है बस उस खौफ से सहमा हुआ,
जाने कब झोंका कोई इसको उड़ा ले जाएगा।

सोवियत संघ के सुप्रसिद्ध कवि रसूल हमजातोव ने अपनी पुस्तक "मेरा दागिस्तान" में कहा है कि कवि गण इसलिए पुस्तक लिखते हैं कि लोगों को युग और अपने बारे में, आत्मा की हलचल के संबंध में बता सकें, उनको अपनी भावनाओं और विचारों से अवगत करा सकें। संभवतः कविगण ही संसार के सर्वाधिक उदार व्यक्ति हैं। वे लोगों को सबसे ज्यादा मूल्यवान और वांछित चीज भेंट करते हैं। नासेह नासरीगंजवी भी अपनी जीवन में प्राप्त संचित अनुभवों, नसीहतों, ज्ञान परिधियों और अर्जित मूल्यों को पाठकों के समक्ष पेश करते हैं। यह भी उनका प्रेमबोध को प्रदर्शित करने का एक बेहतर तरीका है।

अपनी एक गज़ल में उनका कहना है कि-

खेत जब सरसों के पीले हो गए,
मस्त रातें, दिन सफीले हो गए।
उनकी यादों की चलीं पुरवइया,
सबके यह लम्हे नशीले हो गए।
उनके होठों से और होने के बाद,
बोल गीतों के रसीले हो गए।
मेरी गजलों, मेरी नज्में, मेरे गीत,
मेरी सेहत के वसीले हो गए।
अब न रखे उनसे नगमों की उम्मीद,
साज दिल के तार ढीले हो गए।
शाम गम नासेह ये डंस लेंगे मुझे,
नाग फरकत के चटीले हो गए।

नासेह साहब ने समय और समाज के मसलों, बदलते दौर में मूल्यों के क्षरण और देश- काल परिस्थितियों को बड़ी बारीकी से अपनी गज़लों का विषय बनाया है। आज का समय बहुत ही कठिन जीवनचर्या से भरा है। नई बनती समाजार्थिक व्यवस्था में जहां बाजारवाद अपनी नित नई चालों से पुरानी जड़ हो चुकी व्यवस्थाओं की चूलें हिला रहा है, वहीं कुछ ऐसे भी बदलाव हो रहे हैं, जिसने हमारे परिवार, सामाजिक संबंधों का ताना-बाना, हमारी तहजीब और सबसे खास हमारी दौलत गंगा-जमुनी संस्कृति नष्ट होने की कगार पर पहुंच गई है। जड़ हो चुके तत्वों का खात्मा तो अच्छा है, परंतु तहजीब ओ तमादुम को बचाए रखने वाली हमारी ताकतें कायम- दायम रहें, यही हमारे दौर - ए-जमाना की सबसे बड़ी जरूरत है। राजनीति समाज को लगातार तोड़ रही है। अब समय आ गया है कि अदब, तहजीब, कला- संस्कृति से जुड़े लोग इसके लिए सार्थक पहल करें। ऐसे दौर के हालात पर नासेह साहब अपनी भावनाओं को यूं व्यक्त करते हैं-

कच्ची दीवारें हैं घर खपरैल का,
डर रहा हूं इसलिए बरसात से।
जन्नतुल फिरदौस कहते हैं जिसे,
वह मिलेगी सिर्फ मां की जात से ।
ए मेरे वक्त मुझे मत उलझ,
मैं तो वाकिफ हूं तेरी औकात से।
हार से मैं अपनी खुश हूं इसलिए,
मेरा दुश्मन खुश है मेरी मात से।
तू तो नासेह शायर गुमनाम है,
कौन वाकिफ है तेरी खिदमात से।

==========

समझ रहा हूं जिसे मेहरबान मेरा है,
यकीन तो नहीं हां यह गुमान मेरा है।
पनाह ढूंढने आखिर कोई कहां जाए,
जमीन मेरी न ये आसमान मेरा है।
हजारों टुकड़ों में तक्सीम कर दिया है जिसे,
वह कुनबा मेरा है वह खानदान मेरा है।
है चप्पे चप्पे पर इसके मरने निशाने कदम,
कसम खुदा की ये हिंदुस्तान मेरा हो
मैं अपने सीने में रखता हूं दर्दे इंसानी,
खुदा का शुक्र है सारा जहां मेरा है।
अभी तो मंजिलें इश्क व वफा है दूर बहुत,
कदम कदम पर अभी इम्तिहान मेरा है।
जमाना सुन के जिसे दम बखुद है नासेह,
वह तेरा जिक्र है हुस्ने बयां मेरा है।

नब्बे पतझड़ों-वसंतों को देख चुके नासेह नासरीगंजवी (मूल नामट्ठ मोहम्मद अबु नासेह) साहब नासरीगंज जैसे एक गुमनाम मुकाम पर रहते हुए भी और मुफलिसी में उच्च विचारों को आत्मसात करते हुए अब भी जीवंतता के साथ साहित्य साधना में लीन होकर नई पीढ़ी को अपना सर्वोच्च ज्ञान बांटने के कार्य में खुशमिजाजी के साथ तल्लीन हैं।

ऐसे महान शायर के सुखद, स्वस्थ और रचनात्मक जीवन के लिए कोटिशः मंगलकामनाएं निवेदित करता हूं।

-लक्ष्मीकांत मुकुल

ग्राम- मैरा, पोस्ट-सैसड, भाया-धनसोई,
बक्सर (बिहार) - 802117
मोबाइल नंबर - 6202077236

योग तन-मन को स्वस्थ रखता है

योग को हमारे जीवनशैली में बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। योग दिवस का आयोजन हर साल किसी खास थीम को ध्यान में रखते हुए ही किया जाता है। इस साल अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को महिलाओं पर केंद्रित किया गया है। इस साल यानि 2024 की थीम है 'योगा फॉर वुमेन इंपावरमेंट' यानी महिला सशक्तिकरण के लिए योग। महिलाओं के मानसिक और शरीरिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

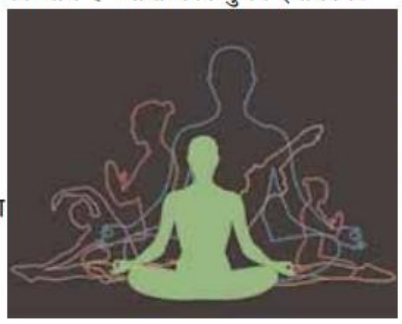

योग शारीरिक और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देकर स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने में मदद करता है। योग व्यक्ति को अनुशासित रहना और अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में अधिक जागरूक रहना सिखाता है।

आधुनिक युग में, भागादौड़ी भरी जिंदगी के बीच व्यक्ति के पास सेहत के लिए वक्त नहीं है और स्ट्रेस लेवल इतना बढ़ गया है कि वो न जाने कितनी बीमारियों की चपेट में आ सकता है। ऐसे में आधे घंटे से 45 मिनट का योग न केवल शरीर बल्कि मन को भी स्वस्थ रख सकता है।

योग न केवल जीवन के इन पहलुओं को समाहित करती है, बल्कि व्यक्ति में स्मृति प्रतिधारण में भी सुधार करती है। जो व्यक्ति नियमित रूप से योग का अभ्यास करते हैं, वे तनाव से दूर रहते हैं, अधिक एकाग्रता के साथ अवधारणाओं को समझते हैं और उन्हें लंबे समय तक ऊर्जावान रखते हैं।

हर साल योग दिवस मनाने का मकसद स्पष्टतौर पर सेहत से जुड़े इसके फायदों को उजागर करना और सभी को अपनी सेहत देखते हुए योगा करने के लिए प्रेरित करना है। योगा के और भी कई फायदे हैं।

योग एक प्राचीन हिंदू अनुशासन है जिसकी जड़ें प्राचीन भारतीय दर्शन में हैं। मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक अनुशासन से संबंधित गतिविधियों का एक समूह शरीर और मन के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए संकलित किया जाता है। शरीर, सांस और मन के बीच यह एकता विभिन्न आसन, श्वास अभ्यास और ध्यान का उपयोग करके स्थापित की जाती है। यह मानसिक, आध्यात्मिक, शारीरिक और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देकर स्वस्थ जीवन को बढ़ावा देने में मदद करता है।

20 जून को आएगा मानसून

पटना (कार्यालय प्रतिनिधि)। मौसम विज्ञान केंद्र से जारी अपडेट के मुताबिक 17 जून को गया, नवादा और जहानाबाद के लिए लू का रेड अलर्ट जारी किया गया है। वहीं पटना, नालंदा और जमुई जिलों में लू का ऑरेंज अलर्ट है। इसके अलावा बेगूसराय, लखीसराय, सारण, शेखपुरा, वैशाली और समस्तीपुर जिले में गर्म दिन के लिए येलो अलर्ट जारी किया गया है। वहीं 18 जून को राजधानी पटना, गया, जहानाबाद और नालंदा में लू के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। पटना सहित गया, डेहरी, गोपालगंज, बांका, बिक्रमगंज में उष्ण लहर का प्रभाव बना रहा। जबकि छपरा, शेखपुरा, जमुई, बक्सर, भोजपुर, वैशाली, पुपरी, औरंगाबाद, नवादा, राजगीर, जीरादेई, अरवल में भीषण उष्ण लहर का प्रभाव बना रहा।

लेकिन मौसम विभाग के अनुसार 20 जून को मानसून पूर्णिया के रास्ते बिहार में कदम रखेगा। इसके पहले 19 जून से ही राज्य में मौसम बदलना शुरू हो जाएगा।

हॉकी इंडिया लीग के लिए रजिस्ट्रेशन शुरू

हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) ने आगामी संस्करण के लिए खिलाड़ियों का रजिस्ट्रेशन शुरू कर दिया है, जो इस साल के अंत में आठ साल के लंबे अंतराल के बाद वापसी कर रही है। हॉकी इंडिया लीग के 2024-2025 संस्करण में आठ पुरुष और छह महिला टीमें शामिल होंगी। हॉकी इंडिया की विज्ञप्ति में कहा गया है कि खेल के इतिहास में यह पहली बार है कि अलग से महिला हॉकी इंडिया लीग आयोजित की जाएगी, जो महिला हॉकी को बढ़ावा देने और इसके बाद भारत में महिला हॉकी खिलाड़ियों की प्रतिभा को बढ़ाने के हॉकी इंडिया के दृष्टिकोण को दिखाता है। हॉकी इंडिया ने टॉप-15 हॉकी खेलने वाले देशों के खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ को रजिस्ट्रेशन करने के लिए आमंत्रित किया है।

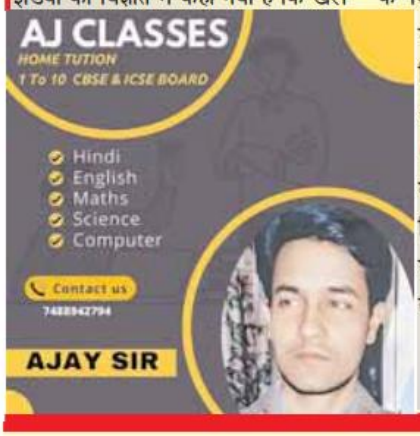

अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) ने हॉकी इंडियन लीग के 2024-25 संस्करण के लिए दिसंबर 2024 के आखिरी हफ्ते और जनवरी 2025 के पहले हफ्ते के बीच का समय दिया है।

-सोनमाटी समाचार नेटवर्क

30 से अधिक भाषाओं में अंतरराष्ट्रीय प्रसार वाले देश के सबसे बड़े प्रकाशन संस्थान नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से प्रकाशित

विज्ञान का इतिहास : हजारों सालों के दार्शनिक चिंतन के वैदिक-पौराणिक संदर्भ के साथ

ब्रह्मांड के उद्भव, जीवन की उत्पति और पृथ्वी पर आदमी के अवतरण की अब तक अनकही प्रमाणित वैज्ञानिक कहानी

सुनो मैं समय हूं

(गुजरे हुए कल, वर्तमान और आने वाले कल का भी)

लेखक : कृष्ण किसलय

फोन 9708778136, 9523154607 **Email: krishna.kisalay@gmail.com**

एनबीटी, इंडिया के पटना (06122546967), दिल्ली (01126707700) सहित देश-विदेश के विक्रय केंद्रों पर उपलब्ध। आनलाइन बिक्री। **nro.nbt@nic.in**

मूल्य : 105 रु. (सचित्र 184 पृष्ठ)

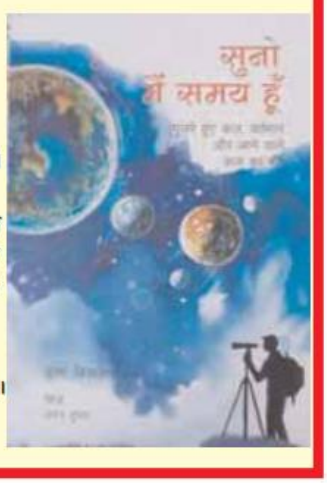

ब्रह्मांड खंड : दिमाग को चकरा देने वाली है ब्रह्मांड की गुत्थी। विराट-विराट ब्रह्मांड का सटीक संचालन कैसे? कब पैदा हुआ, कहां फैल रहा, कब होगा इसके फैलने का अंत? ब्रह्मांड का 80 फीसदी पदार्थ अदृश्य। जब विज्ञान की परिधि में आया ब्रह्मांड। जब ब्रूनो को जिंदा जला दिया गया। जहां से हुई आधुनिक भौतिक विज्ञान की शुरुआत। ईश्वर ने बनाई सृष्टि तो ईश्वर को किसने बनाया? नियम से विकसित ब्रह्मांड में ईश्वर का क्या काम? हम जिस आकाशगंगा में हैं। फर्मियान, बोसोन कणों से बना ब्रह्मांड और गाड पार्टिकल से बना दृश्य जगत।

जीवन खंड : पृथ्वी पर पनपा या आकाश से टपका जीवन? जीव उत्पत्ति की अनसुलझी गुत्थी। लुप्त हैं जैव विकास-क्रम की कई कड़ियां। सोन-घाटी में मिले सौ करोड़ साल पुराने बहुकोशीय जीवाश्म। आदि प्रोटीन ने पत्थर खाकर उगली मिट्टी। थलचर से जलचर बनीं ह्वेल, डाल्फिन। 3 अरब वर्ष पूर्व पैदा हुए बैक्टीरिया का वंशज और बंदर का बेटा है आदमी? चिंपैजी है आधुनिक आदमी का रिश्तेदार। धरीत के सभी जीवों में जब है एक जैव पदार्थ, फिर गुफा से निकलने के बाद आदमी (होमो सैपियन) का ही पृथ्वी पर एकछत्र राज क्यों?